ORIGINAL RESEARCH PAPER

Hindi

KEY WORDS:

शंकर शेष के नाटकों की संवाद योजना

Dr. Gyani Devi Associate Professor, Guru Kashi University, Talwandi Sabo (panjab)

डॉ. शंकर शेष ने अपने सभी नाटकों में नाटक के प्राण तत्वों में से एक संवाद योजना का सफलता पूर्वक निर्वाह किया है। इस दृष्टि से उन्हे अच्छी सफलता भी मिली है। उन्होंने अपने नाटकों के संवादों में जिस भाषा का प्रयोग किया है वह आम आदमी की, बोलचाल की प्रचलित भाषा है। उनके सभी नाटकों के संवाद सरल, स्वाभाविक, संक्षिप्त, चुस्त, चुटीले एवं प्रभावशाली हैं, जिसके कारण उनके संवादों की विषेशताएँ यथार्थवादी रंगमंच पर प्रभावशाली सिद्ध होती है। डॉ. शंकर शेष ने अपने सभी नाटकों में दीर्घ आकारीय संवाद, लघु आकारीय संवाद, एकाक्षरी संवाद, बिन्दु चिन्ह आदि का प्रयोग अत्यंत सफलतापूर्वक किया है। उनके सभी नाटकों के संवाद 'हताश होकर', 'रुखी हँसी से', 'नाराजी के साथ', थोड़ा चीढ़कर, थोड़ा झेंपकर, थोड़ा नरम होकर, थोड़ा दुःखी होकर, थोड़ा लजाकर, थोड़ा क्रोध से, हँसते हुए, कुछ रुआँसी मजाक से, घबराहट से, अन्य मनस्क भाव से, उत्सुकता से, व्यंग्य से, आश्चर्य से क्रोधित होकर, क्रोध से भड़कते हुए, आर्त स्वर में खुशामदी स्वर में, आवेश में दृढ, खीजकर, चीखकर कहे गये हैं। यहाँ पर डॉ. शंकर शेष के सभी नाटकों की संवाद योजना का अध्ययन किया है।

डॉ. शंकर शेष को 'मूर्तिकार' की संवाद योजना में समग्र रूप में अच्छी सफलता मिली है। संवादों की भाषा बोलचाल की प्रचलित भाषा है । संवादों की विषेषताएँ यथार्थवादी रंगमंच पर प्रभावशाली सिद्ध होती है। नाटक की वाक्य रचना सरल, संक्षिप्त है। "नाटक की वाक्य रचना चुस्त एवं संक्षिप्त बनी है। वाक्यों के माध्यम से प्रभाव की सृष्टि हुई है, साथ ही कलात्मकता को उत्पन्न किया गया है। प्रभावात्मक वाक्यों द्वारा पात्रों की मानसिक स्थिति स्पष्ट हो जाती है।" नाटककार ने नाटक में बिन्दु–चिन्हों का भरपूर मात्रा में प्रयोग किया है। जैसे–

"ललिता : मेरा एक काम करेगा लल्लू
लल्लू : पहले काम तो बताओ चाची...
ललिता : ये ले दस रुपये... अपना हमीद खा है न कोयलेवाला, उसे पहुँचा दे...
लल्लू : इतनी जल्दी क्या है चाची, कल पहुँचा दूँगा..."

नाटककार ने मूर्तिकार में हताश होकर, रूखी हँसी से, नाराजी के साथ थोड़ा चिढ़कर, थोड़ा झेंपकर, थोड़ा नरम होकर, थोड़ा दुःखी होकर, थोड़ा लजाकर, थोड़ा क्रोध से, हँसते हुए, कुछ रुआँसी मजाक से, घबराहट से, अन्यमनस्क भाव से, उत्सुकता, से व्यंग्य से, दुःख से, आश्चर्य से, खुशी से, कोधित होकर, क्रोध से भड़कते हुए, चीखकर तथा चिल्लाकर संवाद कहे हैं। कुलमिलाकर मूर्तिकार के संवाद प्रभावोत्पादक, सरल एवं संक्षिप्त हैं।

नाटक का कथ्य संवाद पर ही आधारित होता है। संवादों के माध्यम से ही सम्पूर्ण नाटक की कथा को गति प्रदान होती है। संवाद जितने चुस्त और चुटीले हो उतना ही नाटक सफल होता है। रत्नगर्भा नाटक के संवाद भी उतने ही चुस्त एवं चुटीले है, जितने की एक सफल नाटक के होने चाहिए। "चुस्त और चुटीले संवाद–योजना के साथ–साथ उसका पात्रानुकूल एवं भावानुकूल होना भी नाटक की सफलता में महत्वपूर्ण योगदान देता है। रत्नगर्भा का कथोपकथन बहुत ही चुस्त और पात्रानुकूल है।"

डॉ. शंकर शेष हास्य का आधार लेकर संवादों में मनोरंजक संजीवता के साथ युगबोध का परिचय हँसते–हँसाते करा देते हैं। पुरातन संस्कृत भाषा के प्रति अतिरिक्त अभिमान रखने वालों की दुहरी भूमिका का एक उदाहरण रत्नगर्भा के इस संवाद से प्रस्तुत किया गया है, जैसे–

"आत्माराम : आज मैनें हेअर कटिंग सेलून का नाम परिवर्तित कर, उसे राष्ट्रीय शब्द से जोड़कर... राष्ट्रीय केश कर्तनालय रखा।"

नाटक में लम्बे संवाद भी हैं, अक्सर लम्बे संवादों से पाठक या दर्शक उबते हैं, लेकिन रत्नगर्भा के संवादों में भावपूर्णता एवं प्रभाव होने से पाठक या दर्शक उबता नहीं है। रत्नगर्भा के संवाद अपने उद्देश की पूर्ति करते हुए दिखाई देते हैं। 'रत्नगर्भा' के संवादों में शिथिलता एवं प्रभावहीनता होने के बावजूद भी यह संवाद चरित्र–चित्रण में सहायक होते हैं। नाटक के संवादों में कहीं–कहीं दर्शनिकता भी है परंतु यह दर्शनिकता ना 'रत्नगर्भा' की कथावस्तु की गति को मंद बनाती है और ना ही संवादों को बोझिल बनाती है।

'नई सभ्यता : नये नमूने' नाटक में नाटककार ने कथावस्तु के विकास, पात्रों के कियाकलाप, वातावरण के चित्रण, नाटककार के उद्देश्य की पूर्ति के लिए अनुकूल संवाद योजना का आयोजन किया है। नाटक के संवादों में हास्य का सहज गुण भी विद्यमान है जिससे बोझिल तनाव दूर होने में मदद होती है, ऐसे संवादों में हास्य का वातावरण तो उत्पन्न हुआ ही है साथ ही व्यंग्य पर्याप्त मार्मिक बना है। व्यंग्य विधान डॉ. शंकर शेष के नाटककार की केंद्रीय प्रवृत्ति कही जा सकती है जो 'नई सभ्यता : नये नमूने' नाटक के संवादों में खूब उतरी है। आज समाज–सेवा एक धंधा बन गया है। बरसाती मेंढ़कों की तरह समाज सेवक पैदा हो रहे हैं। समाज सेवा के नाम पर दिखावा और औपचारिकता मात्र शेष रही है। उसका एक नमूना 'नई सभ्यता : नये नमूने' में मिलता है। अमीर बाप की बेटी स्मृति महिला–समाज में काम करती है और इन दिनों गंदी बस्तियों के बच्चों को नहलाने का कार्य चल रहा है। उसका प्रेमी 'कृष्ण' इनकी समाज सेवा से अच्छी तरह परिचित है। वह ऐसी महिला समाज सेवियों पर व्यंग्य करता है, "कृष्ण : फिर लक्स टायलेट से उन्हें नहलाते रहना। वाह रे महिला समाज! दस–बीस औरतें कीमती साडियाँ पहन कर बीस–बीस हजार रुपयों की गाड़ी से उतरेंगी और तीन बच्चों को नहला कर पन्द्रह फोटो खिचवाएँगी।" 'नई सभ्यता : नये नमूने' नाटक के संवाद छोटे–छोटे, चुस्त तथा चुटीले हैं।

छोटे–छोटे वाक्यों के संवाद प्रवाहमयी बन गये हैं। जैसे–

"स्मृति : सच कह रहे हो उधो ?
उधो : देवकी की कसम मैड़म ।
स्मृति : (चौंककर) यह देवकी कौन है उधो...
उधो : कोई नहीं मैड़म... देवकी मेरी माँ का नाम है।
स्मृति : माफ करना उधौ मैं तो कुछ और ही समझी थी।"

नाटक में कहीं–कहीं लम्बे संवाद हैं फिर भी दर्शक तथा पाठक कभी उबते नहीं। लेकिन सार्थक तथा गंभीर अर्थ को लेकर वे अपनी उद्देश्य पूर्ति करते हैं। इस तरह से नई सभ्यता : नये नमूने के संवाद हल्के–फुलके, सहज, प्रभावी एवं संप्रेषणीय है।

'तिल का ताड़' नाटक के संवाद संक्षिप्त हैं फिर भी नाटक के कथानक को रोचक बनाने में सहायक सिद्ध होते हैं। नाटक की मुख्य कथा को आगे बढाने में भी सहायक होते हैं। "संवाद संक्षिप्त हैं, मुख्य कथा को आगे बढ़ाने में सहायक व्यंजना से भरपूर होने के बावजूद भाषा आम आदमी के समीप है। भाषा सौंदर्य ने हास्य–व्यंग्य के छीटों से नाटक को सरोबार रखा है।" इस तरह से नाटक का समूचा व्यंग्य संवादों में है। 'तिल का ताड़' नाटक में व्यंग्यात्मक संवादों का आयोजन भी भरपूर मात्रा में हुआ है, ब्रह्मचारी तथा प्राणनाथ के उक्त संवादों से व्यंग्य झलकता है। जैसे–

"ब्रह्मचारी : अरे प्राणनाथ जी, बड़ी झँझटों में फंसा हूँ। अपने शहर में अखिल भारतीय ब्रह्मचारी समाज का अधिवेशन हो रहा है न? उसी के लिए चंदा इकटठा कर रहा हूँ।

प्राणनाथ : क्या देश का ब्रह्मचर्य चंदा देने से टिकेगा?
ब्रहमचारी : मजाक की बात नहीं है प्राणनाथ जी, सीरियसली सोचने की बात है। मैं तो आप से पच्चीस रुपये से कम चंदा नहीं लूँगा।
प्राणनाथ : भाई माफ करो, ब्रह्चारीजी, अपना ब्रह्मचर्य इतना महँगा नहीं है।"

नाटक के संवाद संक्षिप्त होने के साथ–साथ चुस्त भी है उनमें कहीं भी शैथिल्य नहीं है। प्रभाव के साथ कलात्मकता की सृष्टि भी हुई है। नाटक में संक्षिप्त संवादों के साथ–साथ दीर्घ संवादों का आयोजन भी अवसरोचित स्थान पर हुआ है। इस प्रकार तिल का ताड़ नाटक के संवाद सहज, संक्षिप्त, नाटकीय, आम आदमी के समीप, हास्य व्यंग्य से भरपूर एवं बोलचाल के हैं।

'बिन बाती के दीप' नाटक के संवाद पात्रों के किया–कलापों को हमारे सामने उद्घाटित करने के साथ–साथ कथावस्तु के विकास में भी सहाय्यक सिद्ध होते हैं। संवाद कहीं–कहीं बहुत ही संक्षिप्त दिखाई देते हैं तो कहीं–कहीं दीर्घ संवाद योजना का भी आयोजन हुआ है। कहीं–कहीं संवादों में साहित्यिक गांभीर्य आ गया है। जैसे–

"शिवराजः मुझे साहित्यिक यश की भूख थी। विशाखा का पहला उपन्यास अंधी होने के समय लगभग पूरा हो गया था। मेरी इस क्षण की भूख ने मुझे बेईमान बना दिया। मुझे क्या पता था कि पहले ही उपन्यास का इतना स्वागत होगा। उसकी हजारो प्रतियाँ बिकी। एक साल में उसके चार संस्करण निकले। पैसा बरस गया, हर कहीं उसकी चर्चा हुई और मैं रातों रात हिन्दी का सर्वश्रेष्ठ लेखक बन गया।"

नाटक में छोटे छोटे चुटीले तथा प्रभावोत्पादक संवाद भी भरपूर मात्रा में हैं जिसमें आधुनिक मंच के सभी गुण विद्यमान है। जैसे–

"मंजू : ऐ मिस्टर आप कौन हैं? सीधे बिना पूछे घुसे चले आ रहे हैं।
आनंद : ओ, हो अब इस मकान में आने के लिए पूछना भी जरूरी हो गया है ?
मंजू : जी हाँ। हर सभ्य आदमी, जब किसी के घर में आता है, तो पहले दरवाजा खटखटा लेता है।

आनंद : पर असभ्य आदमी किसी के घर आता है, तब क्या करता है ?
मंजू : तब वह आप की तरह आता है। कहिए क्या काम है?"

नाटक में कई अनुभूत सत्यों को भी नाटककार ने संवादों के माध्यम से प्रभावशाली रूप में व्यक्त किया है। विशाखा के इस संवाद में मानवीय जीवन का बहुत बड़ा सत्य निहित है, जीवन में यदि कुछ विश्वासों की आवश्यकता होती है तो कुछ अंधविश्वासों की भी।" साथ–साथ नाटक में बिन्दु चिन्हों का प्रयोग भी हुआ है। डॉ.नीलिमा शर्मा 'बिन बाती के दीप' नाटक के संवादों के बारे में कहती हैं, "नाटक में छोटे–छोटे तीखे और मंचीय अनुकूलता लिए हुए संवादों की बहुलता है, लेकिन उसे संलग्न दृश्यों में बड़े–बड़े एकरस संवादों की संख्या भी कम नहीं है जो आगे–पीछे दृश्यगत प्रभाव को कम कर देते हैं।" इस प्रकार 'बिन बाती के दीप' के संवाद नाटक की कथा को गति प्रदान करने में सक्षम है।

'बाढ़ का पानी' नाटक के संवाद प्रभावपूर्ण एवं सौन्दर्य से परिपूर्ण है। 'बाढ़ का पानी' के संवादों में दा िनिकता का भी पुट मिलता है। बाढ़ का पानी' नाटक के संवादों में दर्शन होने के कारण उन्होने सूक्ति रूप धारण किया है। इसी कारण नाटक के संवाद बहुत ही प्रभावी बन गये हैं। बटेसर के इस संवाद ने सूक्तिरुप धारण कर लिया है। जैसे–

"बटेसर : पद–पद कुछ नहीं भैया। सच्चाई को समझने की कोशिश करो, थोड़ा उपर उठकर सोचो। क्या यह इन्सानियत पर कलंक नहीं है कि आदमी गधों, घोड़ों और बिल्ली–कुत्तों को तो छूने में घृणा न करे, पर आदमी को छूने में घिन हो। पंडित तुम पर बहुत आशाएँ हैं मेरी। आज सब एक हो गये हैं। सब एक साथ खा–पी रहे हैं, नर्मदा माँ ने सबके मन का मैल धो दिया है– पर तुम।" नाटक में कहीं–कहीं लम्बे संवाद भी हैं परंतु इन लम्बें संवादों से पाठक या दर्शक उबते नहीं परंतु संक्षिप्त संवाद जिस प्रकार नाटक की प्रभावोत्पादकता बढ़ाने तथा दर्शकों का ध्यान आकर्षित करने में महत्वपूर्ण योगदान देते हैं उतने लम्बे संवाद नहीं। कहीं–कहीं लम्बे संवादों से दर्शक तथा पाठकों का ध्यान बट जाता है। नाटक में लम्बे संवादों के साथ–साथ संक्षिप्त, चुस्त एवं चुटीले संवादों का आयोजन भी भरसक मात्रा में हुआ है। इस संदर्भ में डॉ. प्रकाश जाधव ने ठीक ही कहा है, बाढ़ का पानी के अधिकांश संवाद चुस्त–दुरूस्त, सारगर्भित,

संक्षिप्त एवं चुटीले हैं। संवाद अपने चुटीले पन के कारण नाटक को क्षिप्र–गति प्रदान करते हैं।"

अतः हम कह सकते हैं कि 'बाढ़ का पानी' के संवाद छोटे–छोटे, सरल, सहज, चुस्त चुटीले, सारगर्भित तथा चरित्र चित्रण में सहायक है।

प्रस्तुत नाटक के संवाद भी उतने ही सार्थक, सहज, सरल, संक्षिप्त एवं चुटीले हैं जितने की डॉ. शंकर शेष के अन्य नाटकों के संवाद नाटक में छोटे– छोटे तीखे संवाद भी हैं जो दर्षकों का ध्यान आकर्षित करने में काफी सहायक सिद्ध होते हैं। जैसे–

"तर्कतीर्थ : मैं काफी पीने नहीं आया हूँ।
डॉ.जयन्त : मैं कॉफी पिलाना भी नहीं चाहता था।
तर्कतीर्थ : तब तुमने उस लड़की को कॉफी बनाने के लिए क्यों कहा ?
डॉ.जयन्त : सिर्फ इसलिए कि तुम्हारी मूर्खतापूर्ण बातों से उसकी रक्षा हो सके।
तर्कतीर्थ : जानते हो मैं कहाँ से आ रहा हूँ ?
डॉ.जयन्त : जानता तो नहीं पर जानना चाहूँगा।
तर्कतीर्थ : मैं मरघट से आ रहा हूँ।"

निष्कर्ष:

संक्षिप्त तथा चुटीले संवादों के साथ–साथ नाटक में कुछ लम्बे संवाद भी हैं जो गंभीर वातावरण की निर्मिति करते हैं, "बन्धन अपने–अपने नाटक के संवाद भी विष्लेषण की भाषा प्राप्त कर मंचीय रंगकौशलपूर्ण नहीं बन सके हैं। वर्णन और विष्लेषण की भाषा में उस नाटक के संवाद अनावश्यक रूप से लम्बे हैं और गंभीर वातावरण की सृष्टि करते हैं। ऐसे संवाद नाटक में व्यापक मात्रा में हैं।"

अतः स्पष्ट है कि बंधन अपने–अपने नाटक के संवाद स्वाभाविक, चुस्त, चुटीले, भावाभिव्यंजक एवं मनोवैज्ञानिक है। चरित्र–चित्रण तथा दर्शकों में रस की अनुभूति कराने के साथ–साथ देश–काल तथा वातावरण का निरूपण करने में सार्थक सिद्ध हुए हैं।